Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B.A - Part I Paper - II
Metaphysics and Epistemology

1.

GRB BOOKS

Notes (समीक्षावाद)

बुद्धिवाद और अनुभववाद के दीर्घकालीन संघर्ष को समाप्त कर देने का श्रेय कान्ट को है।

अनुभववाद:— अनुभववाद के अनुसार — "ज्ञान प्राप्त करने का एकमात्र साधन अनुभव है।" लॉक के अनुसार — "Mind at birth is a clean slate or tabularasa and all knowledge are acquired through experience."

बुद्धिवाद:— यह ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त है जिसके अनुसार यथार्थ और सत्य ज्ञान की प्राप्ति बुद्धि द्वारा ही हो सकती है, किसी दूसरे साधन से नहीं।

अनुभववाद बुद्धिवाद का विरोधी सिद्धान्त है—

अनुभववाद	बुद्धिवाद
1. ज्ञान की उत्पत्ति का साधन अनुभव है बुद्धि नहीं।	1. ज्ञान की उत्पत्ति का साधन बुद्धि है, अनुभव नहीं।
2. अनुभव से उत्पन्न होने के कारण सभी ज्ञान अर्जित हैं इसलिए कोई भी ज्ञान जन्मजात नहीं है।	2. ज्ञान के आधारभूत प्रत्यय जन्मजात हैं। जिन्हें से ज्ञान उद्भूत होता है
3. बुद्धि अपने आप में निष्क्रिय	3. बुद्धि स्वभावतः क्रियाशील है क्योंकि अपने

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes 2

है क्योंकि पहले वह अनुभव से प्राप्त संवेदनाओं को ग्रहण करती है बाद में मन से संकलन हो जाता।

4. ज्ञान का महत्वपूर्ण अंश आगमनात्मक है क्योंकि विशेषों के ज्ञान के आधार पर आगमन-विधि से सामान्य ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

5. दर्शन का आदर्श वस्तुनिष्ठ विज्ञान है।

6. वस्तुनिष्ठ विज्ञानों को आदर्श मानने से दर्शन का अभिप्राय उन्हीं की तरह अधिक से अधिक सम्भाव्य ज्ञान की प्राप्ति है।

अन्दर से वह ज्ञान उत्पन्न करती है।

4. ज्ञान का प्रमुख अंश निगमनात्मक है क्योंकि सहज प्रत्ययों से निगमन-विधि द्वारा सारा ज्ञान प्राप्त होता है।

5. दर्शन का आदर्श गणित विज्ञान है।

6. गणित को आदर्श रखने से दर्शन पूर्णतः निश्चित ज्ञान प्राप्त और सार्वभौम ज्ञान है।

कान्ट ने बुद्धिवाद और अनुभववाद की निष्पक्ष आलोचना प्रारम्भ की और वे इस परिणाम पर पहुँचे कि बुद्धिवाद और इन्द्रियानुभववाद इन दोनों में अपने-अपने गुण-दोष हैं। दोनों एकांगी हैं। दोनों में आंशिक सत्य है दोनों में एक भी पूर्णतः सत्य

GRB BOOKS
सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

Notes

है। इसलिए इस सन्दर्भ में कहीं भी हारकर झुक गये। विजय किसी दोनों में से किसी की भी नहीं हुई। दोनों में से किसी ने भी ज्ञान की उत्पत्ति प्रामाण्य और सीमा को नहीं समझा। यद्यपि लॉक ने इसका प्रयत्न किया, किन्तु उनका प्रयत्न मनोवैज्ञानिक विश्लेषण मात्र रह गया, वास्तविक अन्वेषण नहीं।

यदि बुद्धिवाद सत्य है तो फिर आधार और पद्धति एक होने पर भी विभिन्न निष्कर्ष क्यों निकल जाते हैं? गणित के सिद्धान्त भी विशेषतः रेखागणित के जिनपर बुद्धिवादियों की अगाध आस्था है, अपनी उत्पत्ति के लिए अनुभव की अपेक्षा रखते हैं। बुद्धिवाद, दर्शन और धर्म दोनों क्षेत्रों में असफल हुआ है। इसका मूल कारण है इन्द्रियानुभव की उपेक्षा करके बौद्धिक कल्पनाओं को ही मान्य समझना। बुद्धिवाद का पर्यवसान अन्धविश्वास में हुआ है।

अनुभववाद भी सत्य नहीं है। यदि हमारा सारा ज्ञान इन्द्रियानुभव से ही उत्पन्न हो और उसतक ही सीमित हो तो, ह्यूम के आत्मघाती सन्देहवाद के अतिरिक्त अन्य कोई गति नहीं है। इन्द्रियानुभव से ही उत्पन्न हो और उसतक ही सीमित हो तो ह्यूम के आत्मघाती सन्देहवाद के अतिरिक्त अन्य कोई गति नहीं है। इन्द्रियानुभव से ही उत्पन्न हो और उसतक ही सीमित हो तो, ह्यूम के आत्मघाती

सुगम पास-बुक
EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

सन्देहवाद के अतिरिक्त अन्य कोई गति नहीं है। इन्द्रियानुभव से केवल अस्त-व्यस्त और क्षणिक सम्वेदन ही उपलब्ध हो सकते हैं जो ज्ञान कहलाने के अधिकारी ही नहीं हैं इन्द्रियानुभव से तो बाह्य जगत की भी सत्ता सिद्ध नहीं हो सकती। कार्य-कारण-भाव आदि सार्वभौम नियम भी नहीं बन सकते। इनके आधार पर विज्ञानों के सम्बन्ध में भी निश्चित ज्ञान नहीं बन सकते। फिर तो निश्चित और सार्वभौम ज्ञान की कल्पना तक नहीं होनी चाहिए। किन्तु ऐसा ज्ञान वास्तव सत्य है। यह ज्ञान इन्द्रियानुभव से आ नहीं सकता। बुद्धि विकल्पों से ही आता है। अतः यह कथन कि समस्त ज्ञान इन्द्रियानुभव प्रसूत है, मिथ्या है। इसपर कोई बुद्धिवाद और अनुभववाद के दोष दिखाकर अब उनके गुण को बताते हैं।

बुद्धिवाद का यह कथन कि हमें निश्चित और सार्वभौम ज्ञान होता है और यह ज्ञान इन्द्रियानुभव से न आकर हमारी बुद्धि के स्वतः सिद्ध और सहज नियमों से आता है सत्य है। ज्ञान की सार्वभौमता असंदिग्धता निश्चित और अनिवार्यता बुद्धि से ही आ सकती है, इन्द्रियानुभव से नहीं। साथ ही साथ अनुभववादियों का यह कथन कि इन्द्रियानुभूति के बिना सत्यज्ञान नहीं हो सकता, सत्य है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

Notes

हमारे ज्ञान के आगमन विभाग संवेदनों या विज्ञान ही है। यदि ज्ञान की सामग्री संवेदन से न आती हो तो वह ज्ञान यथार्थ नहीं हो सकता। अतः हमें व्यवहार का ही ज्ञान हो सकता है परमार्थ का नहीं।

इस प्रकार बुद्धिवाद और अनुभववाद के गुण-दोष दिखाकर कान्ट अपना समन्वयात्मक मत प्रस्तुत करते हैं। हमारा ज्ञान इन्द्रिय-संवेदन और बुद्धि-विकल्प दोनों के सम्मिश्रण से बनता है। प्रत्येक पदार्थ की उत्पत्ति के लिए द्रव्य और स्वरूप की आवश्यकता होती है, जिनको उपादान कारण और स्वरूप कारण कहा जाता है घट का द्रव्य या उपादान है मिट्टी और स्वरूप है इसकी विशिष्ट आकृति केवल मृत्तिका से घट का काम नहीं चल सकता और यदि मृत्तिका न हो तो भले ही कुम्हार के पास घड़े का साँचा हो घड़ा नहीं बन सकता। इसी तरह सोने की अंगूठी के लिए सोना और अंगूठी का साँचा दोनों आवश्यक हैं इन दोनों में से एक की कमी होने पर सोने की अंगूठी का निर्माण नहीं हो सकता। इसी प्रकार ज्ञान के लिए इन्द्रिय-सम्वेदन रूपी उपादान या द्रव्य की और बुद्धि विकल्प रूपी स्वरूप देनेवाले साँचे की आवश्यकता है। बुद्धि विकल्प के अभाव में इन्द्रिय केवल अस्त-व्यस्त संवेदन और असम्बद्ध इन्द्रिय-

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

सम्वेदनों की वेदना मात्र होती और इस वेदना को जो पशुओं को भी होती है, ज्ञान नहीं कहा जा सकता।

इस इन्द्रिय-सम्वेदन को ज्ञान बनाने के लिए बुद्धि-विकल्प के साँचे में ढलना पड़ता है। बुद्धि विकल्प इन अस्त-व्यस्त विशृंखल और असम्बद्ध इन्द्रिय सम्वेदनों को संगृहीत करके इन्हें नियमित और सम्बद्ध ज्ञान का रूप देते हैं इसलिए ज्ञान सदा सविकल्प होता है। अनुमान तो सविकल्प है ही प्रत्यक्ष ज्ञान भी सदा सविकल्प होता है। यदि इन्द्रिय सम्वेदन न हों तो ज्ञान की सामग्री या उपादान के अभाव में बुद्धि-विकल्प निष्क्रिय रहेंगे, और यदि बुद्धि विकल्प न हों तो इन्द्रिय सम्वेदन असम्बद्ध रहेंगे और ज्ञान नहीं बन सकेंगे। काण्ट की प्रसिद्ध उक्ति है - "इन्द्रिय सम्वेदन के बिना बुद्धि विकल्प पंगु या शून्य हैं और बुद्धि विकल्पों के बिना इन्द्रिय सम्वेदन अन्ध हैं।"

सांख्य ने भी प्रकृति के बिना पुरुष को पंगु और पुरुष के बिना प्रकृति को अन्ध माना है।

बुद्धि के सार्वभौम, सहज और अनिवार्य नियम अपनी उत्पत्ति की दृष्टि से इन्द्रियानुभव-

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

निरपेक्ष कोई आगमनात्मक की दृष्टि से इन्द्रिया-अनुभव सापेक्ष है। कान्ट के अनुसार समस्त ज्ञान का आरम्भ अनुभव से होता है किन्तु उसकी उत्पत्ति अनुभव से नहीं होती। प्रत्येक वैज्ञानिक प्रतिज्ञा में एक अंश इन्द्रिय-सम्वेदन द्वारा प्रस्तुत होता है और दूसरा अंश बुद्धि-विकल्प द्वारा। बुद्धिवाद इसे भूल जाता है कि जन्मान्ध व्यक्ति को रूप का बोध नहीं हो सकता। अनुभववाद इसे भूल जाता है कि मूर्ख व्यक्ति की सर्वोत्तम इन्द्रियाँ भी उसे सार्वभौम ज्ञान का बोध नहीं करा सकती। आलोचनावाद सम्वेदन की सामग्री को और बुद्धि विकल्प की सार्वभौमता को स्वीकार करता है और इन दोनों का संयोजक और अनुभव निरपेक्ष वाक्यों के लिए आवश्यक मानता है। हम ज्ञान की सामग्री अनुभव-प्रसूत है किन्तु इस ज्ञान का स्वरूप अनुभव जन्य नहीं है। उसका स्वरूप बुद्धि के सहज सार्वभौम और अनिवार्य नियमों से बनता है। यह तभी हो सकता है जब बुद्धि और बाह्य जगत में सामन्जस्य हो। बुद्धि अपने सहज विकल्पों द्वारा बाह्य जगत का सफल और सार्वभौम ज्ञान प्राप्त कर लेती है। हमारे सत्य ज्ञान के लिए इन्द्रिय संवेदन नितान्त आवश्य है।

सुगम पास-बुक

Notes
GRB BOOKS

बुद्धि - विकल्पों इन्द्रिय संवेदनों को ही ज्ञान का रूप दे सकते हैं यदि संवेदन न हो तो ज्ञान का रूप किसे दिया जायेगा? संवेदनों के अभाव में बुद्धि - विकल्प शून्य और निष्क्रिय रहेंगे।

हमारा ज्ञान सत्य और सार्वभौम होता है - इन्द्रिय - सम्वेदनों के कारण सत्य और बुद्धि विकल्पों के कारण सार्वभौम। गणित में सत्यता और सार्वभौमता देश - काल के कारण आती है। भौतिक विज्ञानों में सत्यता और सार्वभौमिता बुद्धि - विकल्पों के कारण आती है। ज्ञान या अनुभव बिना बुद्धि - विकल्पों के नहीं हो सकता। बुद्धि विकल्प इन्द्रिय - सम्वेदनों को सम्बन्ध करके उन्हें ज्ञान का विषय बनाते हैं। अतः हमारा ज्ञान देश और काल की सीमा से परिच्छिन्न और हमारे बुद्धि विकल्पों से निर्मित होता है।

इन्द्रिय - संवेदनों और बुद्धि - विकल्पों की अतीन्द्रिय और बुद्धि द्वारा अगम्य परमार्थ तक गति न मानना आदि सिद्धान्त कान्ट की महत्ता के सूचक हैं। किन्तु परमार्थ के द्वैत को परमार्थ के बना देना बुद्धि - विकल्पों को केवल साँचे का रूप देना और

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

संवेदनों के अभाव में इनको निष्क्रिय मानना आदि दोष कान्ट के दर्शन में रह जाते हैं। जिनका संतोषजनक समाधान नहीं हो पाया है। कान्ट की सबसे बड़ी भूल विशुद्ध ज्ञाता को भी इन्द्रिय संवेदनों की श्रृंखला में बाँध देना है। इन्द्रिय - संवेदनों के अभाव में विशुद्ध ज्ञाता भी कुछ नहीं कर सकता। इन दोषों के होने पर भी कान्ट की कीर्ति महान है और इनकी महत्ता व्यापक।

इसप्रकार कान्ट अनुभववाद और बुद्धिवाद दोनों की आलोचना करते हुए दोनों में समन्वय करते हैं।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM